[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5929 **H**

Unique Paper Code : 2055092002

Name of the Paper : हिंदी गद्य विकास के विविध चरण (ख)

Name of the Course : **B.Com. – GE : Hindi B**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- **(कोई तीन)** (8×3=24)

(क) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था, ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दन्तवीणोपदेशाचार्य' कहलाती है। वजीरा सिंह कह रहा था कि

कैसे मन-मन भर फ़्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहना सिंह से सारे हाल सुन और कागजात पाकर वे उसकी तुरंत-बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

अथवा

अगर चीफ सामने आ गया और उसने कुछ पूछा, तो वह क्या जवाब देंगी। अंग्रेज को तो दूर से ही देख कर घबरा उठती थीं, यह तो अमरीकी है। न मालूम क्या पूछे। मैं क्या कहूँगी। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जाएं। मगर बेटे के हुक्म को कैसे टाल सकती थीं। चुपचाप कुर्सी पर से टांगें लटकाए वहीं बैठी रहीं।

(ख) क्या भारत में ऐसा समय भी था,जब प्रजा के लोग राजा के घर जाकर होली खेलते थे और राजा-प्रजा मिलकर आनंद मनाते थे! क्या इसी भारत में राजा लोग प्रजा के आनंद को किसी समय अपना आनंद समझते थे?अच्छा यदि आज शिवशम्भू शर्मा अपने मित्रवर्ग सहित अबीर गुलाल की झोलियाँ, भरे रंग की पिचकारियाँ लिए अपने राजा के घर होली खेलने जाए तो कहाँ जाए? राजा दूर सात समुद्र पार है। राजा का केवल नाम सुना है। न राजा को शिवशम्भू ने देखा, न शिवशम्भू को राजा ने।

अथवा

बेटा, यह कुटुंब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ है। डालियों से ही पेड़ पेड़ है। और डालियां छोटी हो चाहे बड़ी सब उसकी छाया को बढ़ाती है। मैं नहीं चाहता कोई डाली उससे टूटकर पृथक हो जाए। तुम सदैव मेरा कहा मानते रहे हो। बस, यही बात मैं कहना चाहता हूं...यदि मैंने सुन लिया-किसी ने छोटी बहू का निरादर किया है, उसकी हंसी उड़ाई है या उसका समय नष्ट किया है तो इस घर से मेरा नाता सदा के लिए टूट जाएगा।

(ग) हल चलाने वाले और भेड़ चराने वाले प्रायः स्वभाव से ही साधु होते हैं। हल चलाने वाले अपने शरीर का हवन किया करते हैं। खेत उनकी हवनशाला है। उनके हवन कुंड की ज्वाला की किरणें चावल के लंबे और सफेद दानों के रूप में निकलती हैं। गेहूँ के लाल लाल दाने इस अग्नि की चिंगारियां की डालयीं-सी हैं। मैं जब कभी अनार के फूल और फल देखता हूं तब मुझे बाग के मालिक का रुधिर याद आ जाता है।

अथवा

आत्मघात, मनुष्य की जीवन से पराजित होने की स्वीकृति है। बिबिया जैसे स्वभाव के व्यक्ति पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करते। कौन कह सकता है कि उसने सब ओर से निराश होकर अपनी अंतिम पराजय को भूलने के लिए ही यह आयोजन नहीं किया? संसार ने उसे निर्वासित कर दिया, इसे स्वीकार करके और गरजती हुई तरंगों के सामने आंचल फैलाकर क्या वह अभिमानिनी स्थान की याचना कर सकती थी?

2. हिंदी कहानी के तत्वों का परिचय दीजिए।

अथवा

हिंदी एकांकी विधा का परिचय दीजिए। (15)

3. चंद्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' कहानी का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा

भीष्म साहनी कृत 'चीफ की दावत' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

4. 'एक दुराशा' निबंध का सार अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

अथवा

सरदार पूर्ण सिंह कृत 'मजदूरी और प्रेम' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (15)

5. महादेवी द्वारा रचित संस्मरण 'बिबिया' के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

उपेन्द्रनाथ अश्क विरचित एकांकी 'सूखी डाली' की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :- (6)

(क) बेला का चरित्र चित्रण।

(ख) संस्मरण विधा।